क्या सभी डायनासौर के पंख होते थे?

हाल ही में जर्मनी में खोजे गए एक डायनासौर जीवाश्म के अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला जा रहा है कि संभवतः पंख या पंखनुमा रचनाओं की उपस्थित डायनासौर समूह का एक लक्षण था और यह लक्षण पक्षियों में या पक्षीनुमा डायनासौरों में पहली बार प्रकट नहीं हुआ था।

वैसे भी 1996 में एक थेरोपॉड *साइनोसौरोप्टेरिकस* जीवाश्म की खोज के बाद से पुराजीव वैज्ञानिकों ने 30 से ज़्यादा ऐसे जीवाश्म खोजे हैं जिनमें पंखनुमा रचना नज़र आती है। इनमें से अधिकांश सील्यूरोसौर समूह के हैं जो थेरोपॉड समूह का ही एक उपसमूह है। इनमें डरावना टायरेनोसौर शामिल है।

मगर ऐसा भी नहीं है कि सारे पंखदार डायनासौर इसी समूह के हैं। रीढ़ की हड्डी के आसपास पंखनुमा तंतु वाले डायनासौर अन्य समूहों में भी पाए गए हैं। और अब जो जीवाश्म मिला है, जिसे *स्किउरुमाइमस अल्बर्सडोरफेरी* जैसा मुश्किल नाम दिया गया है, में तंतुनुमा पंखों की उपस्थित के आधार पर तो वैज्ञानिकों को लगने लगा है कि शायद पंख या पंखनुमा रचनाओं की उपस्थिति पूरे डायनासौर समूह का लक्षण रहा होगा।

15 करोड़ वर्ष पुराना *स्किउरुमाइमस* का जीवाश्म जब मिला तो यह पंखों के आवरण से ढंका था। इस तरह की तंतुनुमा रचनाएं अन्य डायनासौर जीवाश्मों में पहले भी देखी जा चुकी थीं मगर गौरतलब बात यह है कि *स्किउरुमाइमस* उन समूहों का नहीं है। यह एक मेगालोसौर है। मेगालोसौर प्राचीन डायनासौर का वह समूह है जो थेरोपॉड उपसमूह के सबसे निचले पायदान पर है और इनके पैने दांत होते थे। यह पंखदार डायनासौर या पक्षियों का निकट सम्बंधी नहीं है।

उक्त खोज के प्रमुख जर्मनी में म्यूनिख स्थित लुडविग मेक्सिमिलन विश्वविद्यालय के पुराजीव वैज्ञानिक ओलिवर रौहट का मत है कि उनकी खोज का आशय यह है कि पंख या पंखनुमा रचनाओं की उपस्थिति डायनासौर का एक सामान्य लक्षण है और इसकी उत्पत्ति इसी समूह में हुई है।

अन्य शोधकर्ता इस तरह के निष्कर्ष को जल्दबाज़ी मान रहे हैं। उनका कहना है कि अभी कई अन्य डायनासौर समूहों पर शोध करना होगा तभी ऐसा कहना मुनासिब होगा। एक और बात यह कही जा रही है कि हो सकता है कि यह लक्षण अलग-अलग समूहों में स्वतंत्र रूप से प्रकट हुआ हो। मतलब ज़रूरी नहीं कि यह लक्षण डायनासौर के शुरुआती वंशजों में रहा हो।

अलबत्ता, रौहट मानते हैं कि पंख की उपस्थिति को डायनासौर का सामान्य लक्षण माना जाना चाहिए और जब हम इन जीवों का कलात्मक निरूपण करते हैं तो इस बात का ध्यान रखना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***